10

यीशु की कलीसिया: आराधना (2)

पिछले पाठ का अधिकांश भाग आराधना की चार अभिव्यक्तियों अर्थात प्रभु-भोज, परमेश्वर के वचन की शिक्षा, प्रचार, प्रार्थना, और चन्दे पर केन्द्रित था। इस पाठ में, हम विश्वास की पांचवीं अभिव्यक्ति, गाने पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

गाना हमेशा ही आराधना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति रहा है। पुराने नियम में, दाऊद ने कहा, ''मैं यहोवा के तम्बू में जयजयकार के साथ ... उसका भजन गाऊंगा'' (भजन संहिता 27:6ख)। नये नियम में भी गाना आराधना की अत्यावश्यक अभिव्यक्ति है।

गाना हमारी व्यक्तिगत उपासनाओं में शामिल होना चाहिए। याकूब ने लिखा, ''यदि कोई आनन्दित हो तो वह स्तुति के भजन गाए'' (याकूब 5:13ख)। हम में से कइयों को याद होगा कि हमारे माता-पिता या दादा-दादी अपना काम करते हुए भजन गाया करते थे।

परमेश्वर की यह भी आज्ञा है कि गाना हमारी सार्वजनिक आराधना का भाग हो। इब्रानियों 2:12ख कहता है, ''सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा।''[1] पौलुस ने इफिसुस में मसीहियों को आज्ञा दी कि ''आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो'' (इफिसियों 5:19क)। उसने कुलुस्से में भी कलीसिया से कहा कि वे ''भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत'' गाकर एक दूसरे को सिखाया और चेताया करें (कुलुस्सियों 3:16)। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 14 में सार्वजनिक आराधना सभाओं के लिए मापदण्ड देते हुए संकेत दिया कि मसीही लोग ''आत्मा से गाएं और बुद्धि से भी गाएं'' (1 कुरिन्थियों 14:15)।

इस पाठ में, सार्वजनिक आराधना पर बल दिया जाएगा। इसमें आने वाले सिद्धांत व्यक्तिगत आराधना में भी लागू हो सकते हैं।

परमेश्वर क्या चाहता है

गाने के बारे में नये नियम की आयतों की सूची में मरकुस 14:26 आता है, जहां यीशु ने और उसके चेलों ने जैतून के पहाड़ पर जाने से पूर्व एक भजन गाया था।[2] इसमें प्रेरितों 16:25 भी आएगा, जहां ''आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास ... परमेश्वर के भजन गा रहे थे।'' मुझे ये आयतें अच्छी लगती हैं क्योंकि इनसे मुझे पता चलता है कि यीशु और

उसके अनुयायियों को गीत गाना उतना ही प्रिय था, जितना मुझे। सूची में और आयतों के साथ वे पद भी शामिल होंगे, जिनका अभी-अभी उल्लेख हुआ है:[3]

> ... जैसा लिखा है; कि इसलिए मैं जाति-जाति में तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम के भजन गाऊंगा (रोमियों 15:9)।
>
> ... मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा; और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा (1 कुरिन्थियों 14:15)।
>
> ... मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा, सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा। (इब्रानियों 2:12)।
>
> यदि तुम में कोई दुखी हो तो वह प्रार्थना करे: यदि आनन्दित हो, तो वह स्तुति के भजन गाए (याकूब 5:13)।

आराधना में गाने के सम्बन्ध में जितना हमें पता होना चाहिए, इफिसियों 5:19 और कुलुस्सियों 3:16 उसे संक्षिप्त करती दो आयतें हैं, ये दोनों आयतें एक जैसी हैं:

> और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो (इफिसियों 5:19)।
>
> ''मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाधिक बसने दो; और सिद्ध ज्ञान के साथ एक दूसरे को सिखाओ, और परामर्श दो। अपने-अपने मन में धन्यवाद के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान तथा आत्मिक गीत गाओ'' (कुलुस्सियों 3:16; ROV)।

इन आयतों से स्पष्ट होता है कि परमेश्वर चाहता है कि हर कोई गाए। गाने की आज्ञा कुछ चुने हुए लोगों को संबोधित करके नहीं दी गई है। यह उन तक ही सीमित नहीं है जिनकी आवाज़ सुरीली है। ये निर्देश पूरी मण्डलियों को संबोधित करते हुए दिए गए थे। परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई बैठकर केवल सुनता ही रहे; वह चाहता है कि हर कोई गाए।[4] हो सकता है कि किसी में गाने की योग्यता हो या न हो, फिर भी (जैसे पुराने नियम का एक लेखक कहता है) वह, यहोवा की ''जयजयकार कर'' सकता है (भजन संहिता 95:1)।[5]

ये आयतें हमें बताती हैं कि परमेश्वर आराधना में हम से किस प्रकार के गीतों का प्रयोग चाहता है, ''भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत।'' इन तीनों श्रेणियों में भिन्नता करना कठिन है,[6] परन्तु मुख्य बात है ''आत्मिक'' गीत गाना: आराधना में उपयोग किए जाने वाले गीत शरीर के बजाय आत्मा को अच्छे लगने वाले होने चाहिए।[7]

ये दोनों आयतें संकेत देती हैं कि हमारे गीतों की एक दिशा होनी चाहिए: कई बार, वे

बाहर की ओर होंगे, ''*एक दूसरे को,*'' ''सिखाने और परामर्श देने के लिए।'' और समयों में, वे ऊपर की ओर होंगे, ''अपने-अपने मन में *प्रभु के साम्हने* गाते और कीर्तन करते रहो''; ''अपने-अपने मन में धन्यवाद के साथ *परमेश्वर के लिए* भजन और स्तुतिगान करो।''

बहुत से गीत ऐसे हैं जो साथी मसीहियों की ताड़ना अथवा उनके लिए हैं जिन्हें मसीह को स्वीकार करने की आवश्यकता है। अन्य गीतों में परमेश्वर और यीशु की महिमा और धन्यवाद की बातें होती हैं।

अन्त में, ये आयतें ज़ोर देती हैं कि मसीहियों को केवल अपने होंठों से ही नहीं गाना चाहिए, बल्कि; उन्हें ''अपने-अपने मन में धन्यवाद के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान,'' ''और अपने-अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते'' रहना चाहिए। आराधकों के लिए आवश्यक है कि जो शब्द वे गा रहे हैं, उन पर विचार करें। उन्हें ''आत्मा से भी, और बुद्धि से भी गाना'' गाना चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:15)। गीत जो मन से न निकले, वह छत से ज़्यादा ऊपर नहीं उठ सकता।

परमेश्वर क्या नहीं चाहता

जिन आयतों का हमने अध्ययन किया है, आप ने ध्यान दिया होगा कि उन में जिस ''वाद्य/साज़'' का उल्लेख हुआ है, वह केवल मानवीय स्वर और हृदय ही था। संगीत के किसी वाद्य-यन्त्र का हवाला नहीं मिला।[8] पूरा नया नियम पढ़िये और आप पाएंगे कि प्रभु की कलीसिया की आराधना में किसी साज़ का उपयोग नहीं होता था।[9] वीणा और संगीत के अन्य साज़ों का उपयोग पुराने नियम की आराधना में होता था (उदाहरण के लिए भजन संहिता 150), परन्तु नये नियम के दिनों में मसीही आराधना में उनकी कोई उपस्थिति नहीं है।[10]

जहां तक हम जानते हैं, आरम्भिक मसीहियों को यह कभी नहीं कहा गया था कि ''आराधना में साज़ का इस्तेमाल मत करना।'' फिर, क्यों, मसीही युग में आराधना से साज़ों को निकाल दिया गया था? यह निर्णय उसी आधार पर हो सकता है जिस आधार पर प्रभु की मेज़ पर हैम्बर्गर और कोका-कोला दिखाई नहीं देते। जब परमेश्वर बता देता है कि वह क्या चाहता है तो यह उसी श्रेणी की बाकी हर चीज़ को निकाल देता है।

इसे कई बार ''बहिष्कार का सिद्धांत'' कहा जाता है। शायद आप ''बहिष्कार के सिद्धांत'' से परिचित न हों परन्तु आप इस सिद्धांत का इस्तेमाल हर रोज़ करते हैं। यदि आप किसी को दीवार पर सफेद पेंट करने के लिए कहते हैं तो आपको यह कहने की आवश्यकता नहीं, कि ''इसे लाल ... या नीला ... या हरा ... या काला पेंट नहीं करना।'' जब आप स्पष्ट कर देते हैं कि आपको क्या चाहिए और आप कहते हैं, ''इसे *सफ़ेद* पेंट कर दो,'' तो वह स्वत: ही दूसरे रंगों का बहिष्कार कर देता है।

बाइबल बहिष्कार के सिद्धांत के उदाहरणों से भरी पड़ी है। नूह को एक जहाज़ बनाने के लिए कहा गया था (उत्पत्ति 6:14)। यदि उसे यह कहा जाता, ''इसे लकड़ी से बनाना,'' तो वह उसे बनाने के लिए किसी भी लकड़ी का उपयोग कर सकता था: बलूत, चीड़, गोफ़र

की लकड़ी, या कोई भी जो उसे अच्छी लगती।

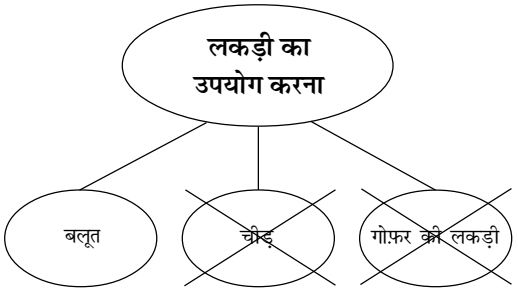

इसके विपरीत परमेश्वर का निर्देश स्पष्ट था, उसने नूह को बताया कि वह इसे गोफ़र की लकड़ी से बनाए (उत्पत्ति 6:14)।[11] परमेश्वर को यह कहने की आवश्यकता नहीं थी, कि ''इसे बलूत की, ...या चीड़ की ...या किसी और प्रकार की लकड़ी से मत बनाना।'' जब उसने गोफ़र की लकड़ी से बनाने के लिए कह दिया तो उससे किसी भी अन्य प्रकार की लकड़ी का बहिष्कार स्वत: ही हो गया।

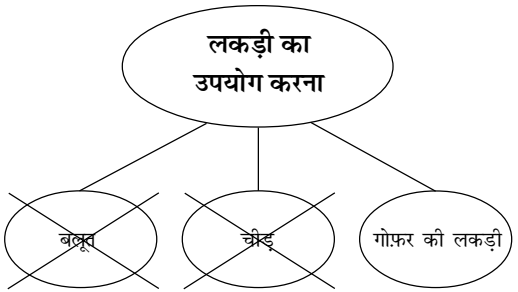

इस्राएल की संतान के मिस्र से निकलने से थोड़ी देर पहले उन्हें अपने घरों के द्वारों की चौखटों पर लोहू लगाने के लिए कहा गया था ताकि मृत्यु उनके घरों में प्रवेश न करे (निर्गमन 12:7, 13)। यदि परमेश्वर ने कहा होता, ''किसी पशु का लोहू लगाना,'' तो वे वध के लिए किसी भी पशु को चुन सकते थे–गाय, बकरी, मेम्ना, या कोई भी पशु। परन्तु, परमेश्वर ने, उन्हें स्पष्ट तौर पर मेम्ने के लहू का उपयोग करने के लिए कहा था

(निर्गमन 12:3, 7)। परमेश्वर ने यह नहीं कहा, ''गाय या बकरी या किसी और पशु का लोहू द्वार की चौखट पर न लगाना।'' जब उसने ''मेम्ना'' कहा, तो इससे किसी भी दूसरे प्रकार के पशु का बहिष्कार हो गया।

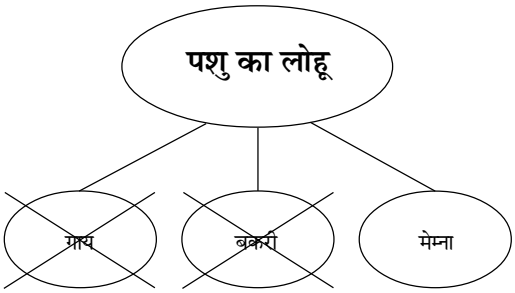

परमेश्वर ने हमें बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी है (प्रेरितों 2:38)। इस आज्ञा के सम्बन्ध में, यदि प्रभु ने यह कहा होता, ''बपतिस्मा लेने वाले पर पानी लगाना,'' तो हम अपनी कल्पना के अनुसार पानी किसी भी प्रकार लगा सकते थे। बपतिस्मा देने के लिए हम लोगों पर पानी छिड़क सकते थे; पर पानी उंडेल सकते थे; उन्हें पानी में डुबो सकते थे परन्तु जैसा कि हमने देखा, कि वचन के अनुसार बपतिस्मा डुबो कर ही दिया जाता है। नये नियम में यह कहने की आवश्यकता नहीं है, ''तुम किसी पर पानी छिड़ककर या उंडेलकर उसे बपतिस्मा न देना।'' जब डुबोना स्पष्ट किया गया है, तो यह छिड़कने और उंडेलने को बाहर कर देता है।

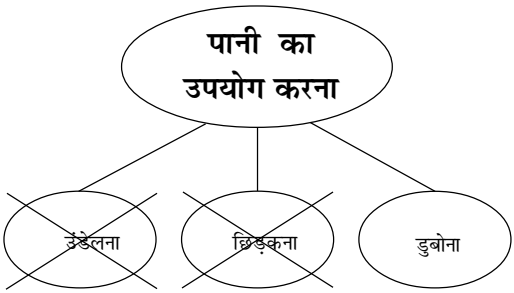

प्रभु-भोज की स्थापना करते हुए यदि यीशु ने कहा होता, ''मेरी देह के प्रतीक के लिए

साधारण भोजन और मेरे लोहू के प्रतीक के लिए साधारण पेय का उपयोग करना,'' तो कलीसिया को यह निर्णय लेने की स्वतन्त्रता होनी थी कि कौन सा भोजन और पेय इस्तेमाल करना है। किसी को हैम्बर्गर और कोका-कोला अच्छा लग सकता है, किसी को खमीरी रोटी और सेब का रस अच्छा लग सकता है। परन्तु जैसा कि हमने देखा, यीशु और आरम्भिक मसीहियों के द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले तत्व अखमीरी रोटी और दाख का रस थे। प्रभु को प्रसन्न करने की इच्छा रखने वालों को यह बताने की आवश्यकता नहीं है, ''हैम्बर्गर और कोक का उपयोग मत करना। खमीरी रोटी और सेब के रस का उपयोग मत करना।'' वे उसी से संतुष्ट होंगे जो परमेश्वर ने अपने वचन में बता दिया है।

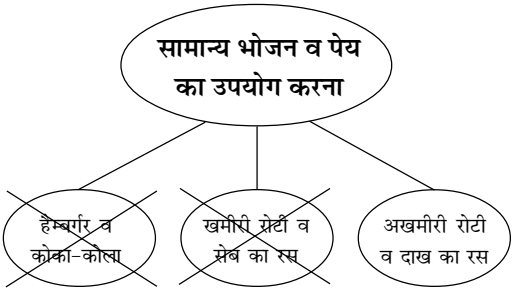

क्या आपको लगता है कि अखमीरी रोटी और दाख रस के स्थान पर हैम्बर्गर और कोक का उपयोग गलत होगा? क्या आपको लगता है कि प्रभु की मेज़ पर हैम्बर्गर और कोक को जोड़ना गलत होगा।[12] मेरे अनुभव में यदि किसी को यह नहीं लगता कि प्रभु-भोज में हैम्बर्गर और कोक को जोड़ना गलत है तो उसे गाने में साज़ को जोड़ने में भी कोई हानि महसूस नहीं होगी।

आपने अनुमान लगा लिया होगा कि आराधना में गाने पर बहिष्कार का सिद्धांत कैसे लागू होता है: यदि परमेश्वर कहता, ''आराधना करते समय संगीत बजाना,'' तो कलीसिया गा सकती थी, साज़ बजा सकती थी या दोनों कर सकती थी परन्तु परमेश्वर ने स्पष्ट कर दिया कि वह क्या चाहता था। उसने कहा,

> ... भजन गाऊंगा (रोमियों 15:9)।
> ... गाऊंगा (1 कुरिन्थियों 14:15)।
> ... भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो और अपने-अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो (इफिसियों 5:19)।
> ... अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान तथा आत्मिक गीत गाओ (कुलुस्सियों 3:16)।

... भजन गाऊंगा। (इब्रानियों 2:12)।

... यदि आनन्दित हो, तो वह स्तुति के भजन गाए (याकूब 5:13)।

परमेश्वर को यह कहने की आवश्यकता नहीं है, ''मसीही आराधना में संगीत के वाद्य-यन्त्रों का इस्तेमाल मत करना।'' जब उसने गाने के लिए स्पष्ट बता दिया है तो किसी भी और प्रकार के संगीत का बहिष्कार स्वत: ही हो जाता है।

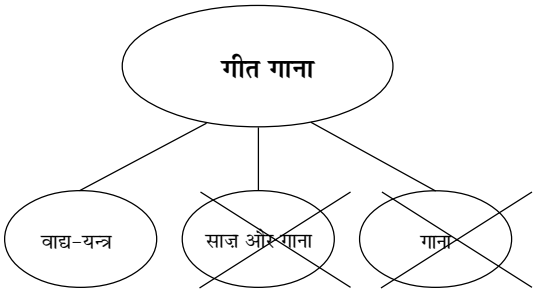

आरम्भिक मसीही स्पष्ट तौर पर बहिष्कार के सिद्धांत को समझते थे क्योंकि उन्होंने अपनी आराधना में से उन साज़ों को निकाल दिया था जो पुराने नियम की आराधना में प्रयोग होते थे। आम तौर पर विद्वान सहमत हैं कि मसीही आराधना सदियों तक एक कैपला[13] थी, जब तक कैथोलिक चर्च ने सैकड़ों वर्ष बाद अपनी आराधना में साज़ आरम्भ नहीं किए थे।[14]

सारांश

कलीसिया को आराधना की सभी अभिव्यक्तियों की भांति गाने में भी सही कार्य और सही व्यवहार दोनों करने चाहिए। सदस्यों की पहले वही करने में दिलचस्पी होनी चाहिए जिसकी परमेश्वर ने आज्ञा दी है। उनके हृदय परमेश्वर की आराधना करने में इस ढंग से लगे हों जो उसे भाता है (इफिसियों 5:10)। हो सकता है कि मुझे लगे कि परमेश्वर को आराधना की यह या वह अभिव्यक्ति भाएगी, परन्तु एकमात्र ढंग जिससे मैं *जान* सकता हूं कि उसे क्या भाता है, वह है उसके वचन को पढ़ना, जिसमें उसने यह प्रकट कर दिया है।

गाते हुए मसीहियों के मन परमेश्वर की महिमा करने में लगे हों (प्रेरितों 2:47; रोमियों 14:11; 15:11; फिलिप्पियों 1:11; इब्रानियों 13:15)। उन्हें ''अपने-अपने मन में धन्यवाद के साथ परमेश्वर के लिए'' गाना चाहिए (कुलुस्सियों 3:16; ROV)। उन्हें ''आत्मा से और समझ से भी'' गाना चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:15)।

सच्चे आराधक ''क्या'' और ''कैसे'' दोनों को ध्यान में रखकर, ''आत्मा और सच्चाई

से'' (यूहन्ना 4:24; ROV) परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]लेखक पुराने नियम की एक आयत, भजन संहिता 22:22 को उद्धृत कर रहा था। [2]मत्ती 26:30 भी देखिए। [3]सूची में होंठों से परमेश्वर की महिमा के लिए आयत-जैसे इब्रानियों 13:15 भी शामिल हो सकती है। इस संदर्भ में इन सभी आयतों को पढ़ना सुनिश्चित करें। [4]कई बार परिस्थितियां ऐसी भी हो सकती हैं जब किसी के लिए गाना असम्भव हो (उसकी कण्ठनली में सूजन हो सकती है), परन्तु यह नियम न होकर एक अपवाद (मजबूरी) है। [5]भजन संहिता 95:1 पढ़ें, आप देखेंगे कि ''ऊंचे स्वर से ... जयजयकार'' करना बाहुल्य से गाना है। [6]कइयों को लगता है, कि ''भजन ज़बूर'' महिमा के गीत हैं और ''स्तुतिगान'' अधिक स्पष्ट गीत हैं, जबकि ''आत्मिक गीतों'' में अधिक जोश है। सम्भवत: हम इन तीन शब्दों में अधिक अन्तर नहीं करते हैं। वे गाने में आराधना की एक ही धारणा को देखने के केवल तीन ढंग हैं। [7]कोई गीत आत्मा को या शरीर को अच्छा लगता है, यह समझने की बात है, परन्तु मुख्य बात यह है कि परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग *आत्मिक* गीत गाएं। [8]वाक्यांश ''संगीत का वाद्य-यन्त्र'' लम्बा और बेढंगा है। समय और स्थान बचाने के लिए इस पाठ में यहां ''यन्त्र'' से मेरा भाव ''संगीत का वाद्य-यन्त्र'' है। [9]नये नियम में आपको कभी-कभी वाद्य-यन्त्रों का उल्लेख मिलेगा, परन्तु वह मसीही आराधना के संदर्भ में नहीं होगा। साज़ों का उल्लेख उदाहरणों में किया गया है (जैसे 1 कुरिन्थियों 13:1 में) और वे प्रकाशितवाक्य की तुलना का भाग हैं (धूप जलाने के साथ, जैसे प्रकाशितवाक्य 5:8 में)। तथापि, प्रभु की कलीसिया की आराधना में वाद्य-यन्त्रों का कोई उल्लेख नहीं है। [10]विद्वान साधारणत: इस पर सहमत हैं। दूसरी ओर तीसरी सदी में मसीहियों ने आराधना और संगीत में साज़ के विरोध में बड़े ज़ोरदार ढंग से लिखा था।

[11]आज हमें नहीं मालूम कि ''गोफ़र की लकड़ी'' क्या थी, परन्तु यह बात महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि *नूह* को मालूम था कि परमेश्वर ने किस प्रकार की लकड़ी की इच्छा की थी। [12]परमेश्वर के प्रकाश में जोड़ने का पाप उतना ही गम्भीर है जितना प्रतिस्थापन या अदल-बदल करने का (देखिए प्रकाशितवाक्य 22:18, 19)। [13]''कैपला'' का अक्षरश: अर्थ है ''चैपल का ढंग।'' यह शब्द आज विशेष तौर पर मौखिक संगीत के लिए प्रयोग किया जाता है। [14]छठी और सातवीं सदी में वाद्य-यन्त्र को आराधना में लाने के विफल प्रयास किए गए थे, किन्तु सन 1250 से पूर्व इसे मान्यता नहीं मिल पाई थी।